दिल्ली-चांदनी चौक। विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया, ब्र.कु.जयप्रकाश, ब्र.कु.विमला व ब्र.कु.सुनिता।

विटा। ब्रह्माकुमारीज के आध्यात्मिक चैनल पीस ऑफ माइण्ड के केबल प्रसारण का उद्घाटन करने के पश्चात विधायक सदाशिवराव पाटिल, ब्र.कु.मीना तथा ब्र.कु.वंदना।

नई दिल्ली-पहाड़गंज। स्वामी श्री शान्तानंदा,सचिव, रामकृष्ण मिशन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.ज्योति।

जयपुर-कमल अपार्टमेन्ट। स्प्रिच्युअल पॉवर एस एन आर्ट ऑफ लिविंग कार्यक्रम में ब्र.कु.पूनम, अशोक लाहोटी तथा अन्य।

जुई कला (हरियाणा)। राधास्वामी प्रमुख सन्त हुजूर कंवर सिंह महाराज को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.निर्मला।

ब्रह्मपुर-शांतिकुंड। डी.आई.जी. अमिताभ ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मंजू। साथ हैं ब्र.कु.माला तथा कौशिक सिन्हा।

राजूला। अल्ट्रा टेक कम्पनी के सभी सीनियर मैनेजर्स को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.अनु तथा ब्र.कु.सरोज समूह चित्र में।

विश्व के लिए कर्म करने वाले विश्वकर्मा

सात वंडर तो बना लिए किन्तु वंडर यह है कि सात गुणों की सुगंध जीवन में नहीं भर पाये। आईये हम समझें कि हमें अपने जीवन में कर्म, किस दिशा में किस प्रकार से करना है। जिससे हम सच्चे अर्थों में विश्वकर्मा के वंशज कहला पायें।

वर्षों से हम विश्वकर्मा जयन्ती मनाते आ रहे हैं। लेकिन विश्वकर्मा जी, 'शिल्पाचार्य' वा 'देवशिल्पी' ने क्या और किस प्रकार से कर्म किया जो विश्वकर्मा नाम पड़ा। वैसे तो नाम से ही तात्पर्य निकलता है कि विश्वकर्मा अर्थात् विश्व के प्रति कर्म करने वाला। उनके नाम के साथ ही उद्देश्य वा संदेश है कि विश्व के प्रति कर्म अनवरत करते रहना है।

विश्वकर्मा ने स्वर्ग का निर्माण किया। देवात्माओं के लिए सर्व साधन-सम्पन्न महलों की व्यवस्था की, जो अतुलनीय थी। स्वर्ग सुनते ही हमें अलौकिक सुख-शांति की अनुभूति होती है। स्थूल वा सूक्ष्म रूप से सभी प्रकार के सुखों से भरी नगरी का निर्माण विश्वकर्मा ने किया। उनकी इन विशेषताओं के कारण ही ब्रह्मा ने नई सृष्टि स्वर्ग का निर्माण कार्य उनसे करवाया। उनमें सर्व कलायें समाई हुई थी।

आज संसार में स्थापत्य कला, मूर्तिकला, वास्तुकला या कारीगरी से संबंधित किसी भी कला में निपुण व्यक्ति अपने को विश्वकर्मा का वंशज वा उत्तराधिकारी समझता है फिर भी विश्वकर्मा समान श्रेष्ठ कर्म नहीं कर पाता है क्योंकि खुद को विश्वकर्मा का वंशज समझने वाले उनकी जीवनशैली व कर्म करने की विशेषताओं से अनभिज्ञ हैं। यदि वह विश्वकर्मा की विशेषताओं को अपनायेंगे तो वे भी स्वर्ग की तरह नई सृष्टि का निर्माण कर सकेंगे। वे आज सुंदर मन को मोहने वाली सुविधा सम्पन्नता भरी सुख-शान्ति, सौहार्द की भावना से कोसों दूर हैं। मानव जीवन उन सुख-सुविधाओं को बनाये रखने में ही अधमरा जीवन जीने के लिए मजबूर है। सम्पन्नता को बनाये रखने में दिन और रात का भेद समाप्त होता जा रहा है। जीवन में हर दिन विकास की चाल तेज होती जा रही है। गगनचुम्बी इमारतें, सागर वा नदियों को पाटने वाले पुल, डैम, धरती को छोड़ अब सागर पर निर्माण कार्य चल रहा है जिसका उदाहरण है दुबई में पाम लैंड, सागर का परिवर्तन कर धरती बनाकर आवास निर्माण किया गया।

बाहरी दुनिया में जितनी ऊँचाई बढ़ी है, अंदर की दुनिया अर्थात् अन्तर आत्मा की दुनिया उतनी ही गौण अर्थात् बौनी होती जा रही है। विश्वकर्मा के वंशजों के कार्य में किन बातों की त्रुटि हुई है जिससे वे आज भी अपने पूर्वज विश्वकर्मा के गुणों की कतार में खड़े होने के योग्य नहीं बन पाये।

सात वंडर बना लिए किन्तु वंडर है कि सात गुणों की सुगंध जीवन में नहीं भर पाये।

आईये हम समझें कि हमें अपने जीवन में कर्म, किस दिशा में किस प्रकार से करना है। जिससे हम सच्चे अर्थों में विश्वकर्मा के वंशज कहला पायें।

कोई व्यक्ति अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए कर्म करता है। एक परिवार सम्पन्न हो लेकिन पड़ोस का परिवार भूखा हो, अभावग्रस्त हो तो उसे अपने सम्पन्न होने का घमण्ड होता है। दूसरे की परिस्थिति उसे अपनी सम्पन्नता की महसूसता कराती है। कोई व्यक्ति अपने समाज के प्रति ही स्वयं को उत्तरदायी समझता है और दूसरे समाज की उन्नति में विरोध पैदा करता है। अन्य समाज की ग्लानि करता है। इसी तरह कोई अपने राष्ट्र के प्रति बलि चढ़ने के लिए तथा राष्ट्र के लिए भले ही उसे किसी की भी जान लेनी पड़े, वह इस कार्य के लिए तत्पर रहता है। अर्थात् उसकी भावना व कर्म राष्ट्र की सीमा रेखा तक सीमित है। सीमित मनोदशा में कर्म करनेवाला कभी विश्वकर्मा का वंशज नहीं बन सकता।

जीवन में कोई भी कर्म करें किन्तु वह बेहद में हो। पवित्रता के साथ उसके कर्मों में स्वयं के साथ औरों का भी कल्याण निहित हो।

विश्वकर्मा, विश्व के प्रति कर्म करने वाले में हर धर्म, हर जाति, हर समाज, हर देश के प्रति असीम सहानुभूति होगी। वह जिस तरह अपने सगे-संबन्धियों को अपने जीवन में, अपनी नज़रों में व अपने कर्तव्यों के कक्ष में जगह देगा वैसे ही विश्व में किसी भी धर्म, जाति, समाज, राष्ट्र व व्यक्ति के प्रति अपनी जिम्मेवारी समझेगा।

ऐसी विश्वस्तरीय बंधुत्व की भावना हमारे मन बुद्धि में, हमारे संस्कार में समायेगी तो ही हम विश्व के प्रति कर्म करनेवाले बनेंगे। अर्थात् सच्चे मायने में विश्वकर्मा बनेंगे।

विश्वकर्मा के चित्र को देखने से उनका चरित्र हमारे सामने प्रत्यक्ष हो जाता है। जैसे किसी के हाथ में कुल्हाड़ी देख हम जान जाते हैं कि यह लकड़हारा है, रंग व तुलिका देखने से पता चल जाता है कि यह चित्रकार है। उसी प्रकार विश्वकर्मा के हाथ में जो अलंकार दिये गए हैं उनसे हम उनके चरित्र को जान सकते हैं। उनके चारो हाथों में क्रमशः रस्सी, माप पट्टी, शास्त्र और कमण्डल या माला दिखाते हैं। उनके पास सदा हंस दिखाया गया है। इन सभी अलंकारों का आध्यात्मिक रहस्य है।

हम देखते हैं कि स्थापत्य कला व भवन निर्माण में रस्सी का बहुत महत्व है। भवन निर्माण के पूर्व स्तम्भ बनाने के लिए गड्ढ़े आदि के चिन्ह बनाने में, दीवार को सीधा बनाने या ईटों को लाइन में रखने में रस्सी का प्रयोग होता है। दूसरा अलंकार है माप-पट्टी। चाहे सोनार हो या लोहार हो, सभी प्रकार के कारीगर भी अपनी कला को सम्पन्न बनाने में माप-पट्टी का प्रयोग करते हैं। तीसरे हाथ में शास्त्र दिखाया गया है। जैसे बच्चों के हाथ में पुस्तक देखकर हम समझ जाते हैं कि यह विद्यार्थी है, उसी प्रकार विश्वकर्मा के हाथ में शास्त्र दिखाने का भाव यही है कि न सिर्फ शिल्पकला में परन्तु आध्यात्मिक ज्ञान में भी वे मास्टर थे। यह ज्ञान उन्हें, शिव परमात्मा ने पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से दिया। ब्रह्मा बाबा जानते थे कि जिसकी आध्यात्मिक उन्नति नहीं होगी वह श्रेष्ठ दुनिया का निर्माण नहीं कर पायेगा और अपनी कला को श्रेष्ठ कार्य में नहीं लगा सकेगा। विश्वकर्मा ने ईश्वरीय ज्ञान का जीवन में विकास किया, जिस कारण सभी देवों ने उन्हें देवशिल्पी का पद प्रदान किया।

चौथे हाथ में कमण्डल वा माला दिखायी गई है। विश्वकर्मा किसकी माला जपते थे? वे परमात्मा शिव को याद करते थे। कमण्डल का अर्थ है – बुद्धि उनकी इतनी स्वच्छ और शक्तिशाली थी कि उसमें सदा परमात्मा की याद समाई रहती थी। आज के भवन निर्माणकर्ता, कारीगरों से काम करवाने में सदा भारी रहते हैं लेकिन विश्वकर्मा के सन्मुख सदा हंस दिखाया जाता है। यह हंस पवित्रता का प्रतीक है। इस संसार में जिन्होंने भी महान कार्य किया वा असम्भव को सम्भव कर दिखाया, उनमें पवित्रता की शक्ति थी। जिसके जीवन में पवित्रता नहीं, वह कभी भी महान कार्य नहीं कर सकता चाहे वह धर्मनेता हो, राजनेता हो, कलाकार हो, संगीतकार हो या शिल्पकार हो।

पवित्रता माने क्या :- पवित्रता का आध्यात्मिक अर्थ है, एक परमपिता परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु शिव से सम्बन्ध, आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध। सारी सृष्टि की आत्माओं के पिता, शिव हैं। सृष्टि में निर्माण कार्य करना यानि शिव पिता के बच्चों के लिए सृष्टि का निर्माण करना – क्योंकि हमारा उनसे अमिट सम्बन्ध है। किसी भी कार्य को सेवा रूप में सभी के कल्याण की भावना से करना, इसे ही पवित्रता कहेंगे। यह कार्य सिर्फ पवित्र व्यक्ति ही कर सकता है। पवित्र वही है जिसका परमात्मा के साथ अटूट सम्बन्ध हो। विश्वकर्मा का जीवन हमारे लिए आदर्श है। वे ईश्वरीय ज्ञान, योग और पवित्रता के बल से महान देवशिल्पी बने। हम वर्षों से उनकी पूजा-अर्चना करने के बावजूद दुःखी और अशान्त हैं क्योंकि हमने पूजा की, किन्तु उनके गुणों को अपने जीवन में नहीं अपनाया। उन जैसा नहीं बने, इससे सिद्ध है कि कर्म करने के लिए जो पवित्रता के आध्यात्मिक सिद्धान्त हैं, वे हमारे जीवन से लोप हो गये हैं। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हर शिल्पकार आध्यात्मिकता से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को समाज के लिए आदर्श बनाए तभी हम विश्व को स्वर्ग बना पायेंगे। **-ब्र.कु.कीर्ति, शांतिवन**

देहरा। सिविल जज अरविंद मलिक को रक्षासूत्र बांधने के बाद ब्र.कु. कमलेश, ब्र.कु. शिवानी।